किछु फुरा गेल हमरा
किशन कारीगर
मिथिलांचल टुडे प्रकाशन

किछु फुरा गेल हमरा

(मैथिली कविता संग्रह)

किशन कारीगर

मिथिलांचल टुडे प्रकाशन
नई दिल्ली

ई पोथी लेखक अधिन सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट अधिनियम अनुरूपे लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छायाप्रति, रिकॉर्डिंगं वा इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक कोनो माध्यम सँ पुनप्रयोग, पुनरूत्पादित आकि संचारित प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

मूल्यः Rs.100 (for individual byers)
Price: US$ .25 (for Library and Institutions In abroad)

© किशन कारीगर

पहिल संस्करण-2014

मिथिलांचल टुडे प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस- बाबा हरिदास कॉलनी, टिकरी कलां, पो0- नांगलोई,
नई दिल्ली-110041.

Corporate office- B-w/333, Tara Nagar, Old Palam Road Kakrola,
Sec-15 Dwraka, New Delhi-110078.

Ph. 011-65858937, Fax: 011-25324134
E-mail : mithilanchaltoday12@gmail.com
Web : mithilanchaltoday.in

Printer:- A26, naraina, industrial, area krishna press.

Designed by: Rajeev ranjan madhukar

"Kichhu Fura Gel Hamra"- A Collection of Maithili Poems
By Kishan Karigar.

श्रद्धा समर्पित

मैथिली सीखौनिहार गुरू, अप्पन पितामह स्वर्गीय रामअवतार राय (मास्टर साहेब)

आओर समस्त मिथिलावासी केँ

सादर समर्पित

आमुख

कविता हृदयक निधि होइत छैक, प्रत्येक काल में परिवर्तनक धार-प्रहार नेने। 'किछु फुरा गेल हमरा' कविता संग्रह सेहो युग विशेषक भाव धाराक संकलन अछि. किशन कारीगर अपन एही प्रथम कृति में, कविता सभक भाव धारा में जीवनक विविध आयामक कतेको रंग समेटने छथि. कत्तो हास्य-व्यंग्य, कत्तो गंभीर चिंतन, प्राय: सब कविता वर्तमान समाजक पीड़ा आ संघर्ष के पाठकक सोझा चित्रित क' दैत अछि.

साहित्य समाजक दर्पण थीक, तें युग आ समाजक प्रभाव साहित्य पर पडैत छैक. एही कारण साहित्य में युगानुरूप नित नवका प्रयोग, नूतन धार आ नव विचार दृष्टि देखा जाइत छैक. कारण जे साहित्यकार कोनो शून्य में नहि उत्पन्न होइत छैथ ? ओ एकटा युग विशेष, समाज आ विशेष परिवेश में जन्म लैत छथि. सरिपों, साहित्य ओ शक्ति अछि जे समाजक ओझरायल व्यवस्था के संरचित करैत अछि. जीवन संघर्षक प्रत्येक ज्वाला के ऐतिहासिक रूप द' देनाय साहित्यक मात्र एतवे धर्म नै अछि मुदा, साहित्य एहो देखैत अछि जे ओही अग्नि-ज्वालक पाछा कोन एहेन विरोधी तत्व रहल जेना बेकारी, महँगी सँ मनुक्ख टूटी रहल अछि आ टूटी रहल अछि ओकर व्यक्तित्व.

'किछु फुरा गेल हमरा' पोथीक नाम एतेक नीक लागल, सांच बजैत छी जे कवि जेकाँ हमरो किछु फुरा गेल आ एक दृष्टि देखि लागल जे मनुक्ख, समाज आ तकर हृदय जेना भिन-भीनौज, बँटबारा, पंडा आ दलाल, मे जाति-मनुक्ख केँ बटैत जनताक संघर्षक कविता अछि. प्रत्येक कविताक यथार्थवादी स्वर जेना एकटा हिलकोर मचा दैत अछि. तहिना कोनो कोनो कविता जेना कि फोंफ काटि रहल सरकार, मुखियाजी देथहिन, घोटालवला पाई सहित कतेको हास्य कविता मे तऽ समाजक विसंगति ,व्यवस्थाक व्यभिचार देखि युवा मोनक आक्रोश छटपटा रहल अछि. कविताक विसंगति सभक मध्य साँस लैत किशन कारीगरक कवि मोन मे एकटा आक्रोश भरल विक्षोभ अछि। एहि विक्षोभक यर्थाथवादी तीव्रता कतेको कविता में छविमान अछि.

रचनाशीलता के आधार बनाय एहि सदी में अपन सक्रिय उपस्थिति देखेनिहार आजुक युवाक अन्तरमन में एकटा चिन्तनशील भावुक मोन होइत छैक, जे साहित्य-संस्कृति में लगातार सक्रिय रहैत अछि. आ हिनका सब के उत्साहित केनाय विद्वान् लोकिनिक दायित्व भऽ' जायत छैक. एहि सँ भविष्योंमुखी रचनाधर्मिता के संरक्षण भेट जायत. किछु फुरा गेल हमरा सहज, सरल भाषा में पाठकक संग चिन्तनक अविरल प्रवाह नेने चलबाक प्रयास केने अछि. हमर अशेष शुभकामना जे, किशन जी मैथिलि साहित्य के अपन नाना प्रकारक रचना सँ श्री वृद्धि करैत रहैथ. हिनक पहिल काव्य संग्रह पाठक आलोचक के चमत्कृत करैत किछु सोचवा लेल विवश करैत रहैक. हम कोनो आलोचक वा कि विद्वान नै छी जे किछु लिखि सकी, हं हृदय सँ जे अनुभूत केलहु निष्पक्ष रूपे सैह अभिव्यक्त करवाक प्रयास केने छी। लेखक के उज्जवल भविष्य लेल अशेष शुभकामनाक संग सादर सिनेह.

डॉ0 शेफालिका वर्मा
दिल्ली, विजयादशमी 24अक्टूबर 2013

अप्पन बात

साहित्य दिसि झुकाव अनचोके भेल. हम विज्ञानक विद्यार्थी रही मुदा तइओ रेडियो सुनइ मे खूम रूचि ली.आस्ते-आस्ते हम चिठ्ठी-पुरजी लिखब स शुरू केलहुँ जे विविध भारती, आकाशवाणी दड़िभंगा/ पटना सहित कतेको जगह सँ प्रसारित भेल. पहिने जे किछु फुराए से सब मोने-मोन वा कि दोस-महिम केँ सूना दिअय, मुदा ओकरा कॉपी पर लिखी एकठाम ओरिया पोरिया के रखबा मे एकदम लापरवाह रही. मुदा जहिया हम 9 क्लास मे पढ़ैत रही, एक दिन इस्कूल सॅ आयल रही. बेरहट खाई लेल बैसलहुँ की हमर माय कहलीह जे बौआ तोहर एकटा कोनो कागत डाक द्वारा एलहु, से देखि ले ताबैत हम खाना निकालि दैति छियौक. हम ओहि लिफाफ के खोली देखलहु त मोन खुशी सँ गद-गद भेल.

ओहि समय मे विविध भारती सँ पारले जी दुवारा बच्चा सभ लेल 'तुम जियो हज़ारों साल' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित होयत रहैक. एही प्रोग्राम लेल हम एकटा कविता लिखी पठेने रहिये आ हमरा सांत्वना पुरस्कारक रूप में 50 रुपैयाक पारले विस्कुट के कूपन भेटल छल. डाक दुआरा आयल ओहि लिफाफ मे पारले जी पुरस्कारक इएह कूपन छल. एही तरहे आस्ते-आस्ते हम हिंदी/मैथिलि मे लिखब शुरू केलहुँ. मैथिलि मे नियमित लिखनाइ हम 2009 में इंटर परीक्षा भ गेलाक बाद केलहुँ आ मैथिलि मे लिखल हमर कविता ओहि समय मे कांतिपुर एफ़. एम. सँ प्रसारित कार्यक्रम (हेल्लो मिथिला) मे भेल जाहि सँ लिखबाक प्रति आओर उत्साह भेल, आ से उत्साह एखन धरि अछि. तकरा बाद 2005 मे रेलवेक नौकरी स त्यागपत्र दए, पत्रकारिताक पढ़ाई करबाक लेल कलकता सँ दिल्ली आगमन भेल आ एतइ नियमित लेखन शुरू केलहुँ जे विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित सेहो भेल. ऑनलाइन ऑफलाइन दुनू माध्यम सँ मिथिलाक सुधि पाठक तक अपन रचना प्रस्तुत करैत रहलहुँ आ हुनका सभक सिनेह निरंतर भेटल. पत्रकारिताक व्यस्ततम सेडयूल मे किछु समय भेटला पर नियमित लेखनी लेल प्रतिबद्ध रहबाक प्रयास हरदम करैत छि.

ओना त हमरा लिखबाक बेसी लुइड़-भास नहि अछि. लेखनी मे त हम एकटा जन्मौती बच्चा मात्र छि. हम त हँसी ठिठोला वाला गप लिखबाक प्रयास केने छी. एनहियों मैथिलि लेखनी मे एकटा कहबि छैक जे जेकरा नहि कोनो काज से हास्य-व्यंग्य लिखे. मुदा तइयो हम सामाजिक/राजनितिक/आ जिनगीक यथार्थ के पाठक तक पहुँचेबाक एकटा छोट-छीन प्रयास 'किछु फुरा गेल हमरा' काव्य संग्रह के माध्यम स केलहुँ अछि. नीक वा कि बजाए से तऽ मिथिलाक सुधि पाठक लोकनि कहताह. हम अप्पन रचनाक माध्यम सँ मातृभाषा आ मिथिलाक माटि-पानि केर प्रति नव चेतना लेल समस्त मिथिलावासी सँ नेहोरा करैत छि. हमरा विचारे मिथिलाक विकास आ सामजिक मिथिला लेल एकटा सामूहिक आग्रह चाही, जाहि मे जाति-धर्म केर कोनो फेरी नहि होउ आ केकरो योगदान के दुत्कारल नहि जेबाक चाही. सभ मिथिलाक मैथिलि छैथ एहेन एकटा बेबहारिक उद्देश्य हेबाक चाही

डा0 शेफालिका वर्मा जीक हम हृदय सँ आभार जनबैत छी जे ओ 'किछु फुरा गेल हमरा' पोथीक आमुख लिखब स्वीकारलैन आ अप्पन निष्पक्ष आषीर्वचन हमरा सन नवतुरिया लेखक के देलन्हि। यथार्थवाद आ नवतुरिया के प्रोत्साहित केनाइ हुनक विद्वताक एकटा एहेन परिचय अछि जेकरा सत सत नमन. संगहि मिथिलाक सुधि पाठक लोकनि के हम कोना बिसैर सकैत छि

जिनक सिनेह, सलाह, आलोचना निरंतर भेटैत रहल आ मैथिली लेखन मे हम डेग बढ़ा रहल छी। मैथिलक ककहरा सीखौनिहार हमर गुरू अप्पन पितामह रामअवतार राय (मास्टर साहेबक) हम जिनगी भरी आभारी रहब जिनक आशीर्वचन सँ हम नव रचनाक संग पाठक लोकनिक समक्ष अबैत रहब। ब्लॉग पर हमर सभटा रचना पढ़ि सकैत छी एक बेर क्लिक कए देखू-
http://kishankarigar.blogspot.in

किशन कारीगर

गुरू पूर्णिमा, 3जुलाई 2013 ई

कविता-क्रम

आबि गेल नव वर्ष	9
बँटवारा	10
भिन भिनौज	12
वीर जवान	14
दहेज	15
देशक चिन्ता	16
दौगल चलि जाएब गाम	17
एकटा तँ ओ छलीह	19
गलचोटका वर	21
गरीब	23
हाकिम भऽ गेलाह	25
हमरो जीबऽ दिअ	27
कक्का हमर उचक्का	28
किछु तऽ हम करब	30
किडनी चोर	32
लिखैत रही	34
नबकनियाँ	36
पियक्कर	37
सेहन्ता	38
नोर झहरि रहल छल	40
पुरस्कार लऽ के नाचू	42
चाह पीबू	44
करीक्का रूप्पैया	46
हँ मे हँ किलाऊ	48
अगिला अंक में छपत	50
अहिं टा एकटा नीकलोक छी	52
फोंफ काटि रहल सरकार	54
फुसियाँहिक झगड़ा	56
ऐना किएक ई की ?	58
लोक करे लूटमार जँका	60
घोंघाउज आ उपराउंज	62
पंडा आ दलाल	64
पद के दुरूपयोग	66
मुखिया जी देथहिन	68
कठपुतली सरकार	70
घोटालावला पाई	72

डिनर डिप्लोमेसी 74
होरी मे मचाउ हुरदंग 76
मनुक्ख बनब कोना ? 78
दूधपीबा नेना 80
बारूद के ढ़ेरी पर बैसल 82

आबि गेल नव वर्ष

प्रणाम-प्रणाम औ भाइ/ की भेल औ भाई
हृदयक स्नेह पठा रहल छी औ भाई
आबि गेल नव वर्ष मंगलमय संसार हुअए
विश्व शांति लेल मंगल कामना करैत छी औ भाई।

नव वर्षक नवका-नवका वसंती उमंग
सभ मिलि वनभोज करब दोस महीमक संग
हम बजाएब ढ़म ढ़म ढ़ोल अहाँ गाउ गीत
कक्का खुशीसँ बजा रहल छथि मृदंग।

कक्का बजलाह कहू की हाल-चाल
काकी बजलीह आबि गेल नवका साल।
आइ सभ मिलि एक संगे खुशी मनाएब
हृदयक स्नेह हम सभकेँ पठाएब।

नवका आंगी नवका नुआ
नवकी कनियाँ पूरी पकाबैए
बुढ़बा बाबा बड़-बड़ बाजैए
धिया-पुता खूम उधम मचाबैए।

पठबैत छी किछु नव-नव सनेश
ई सनेश अहाँ सहज स्वीकार करू
नव वर्षक अछि सादर शुभकामना
सदखनि अहाँ हँसैत मुस्कुराइत रहू।

जहिना चमकै छै चकमक चाँद
ओहिना अहाँ चमकैत रहू
एतबा करैत छी हम कामना अपना माटि-पानि लेल
किछु सार्थक काज करैत रहू।

बँटवारा

कियो धर्मक नामपर कियो जातिक नामपर
कियो पैघक नामपर कियो छोटक नामपर
ऐ समाजक किछु भलमानुस लोक
अपनेमे कऽ लेने छथि बँटवारा।

हे यौ समाजक कर्ता-धर्ता लोकनि
किएक करेलौं अपनेमे बँटवारा
आइ धरि की भेटल/ एतबाक ने
छोट पैघक नामपर अपनेमे मैथिलक बँटवारा।

आइ धरि शोक संतापे टा भेटल
आबो तँ बंद करू एहेन बँटवारा
नै तँ फेर अलोपित भऽ जाएत
मिथिलांचलक एकटा ओ मैथिल ध्रुवतारा।

हे यौ मिथिलाक मैथिल
जुनि करू अपनेमे बँटवारा
ई मिथिला धाम सबहक थिक
एक दोसरक सम्मान करू ई बड्डु निक।

हम कहैत छी मैथिलक कोनो जाति नै
सभ गोटे एक्के छथि मिथिलाक ध्रुवतारा
नै कियो पैघ नै कियो छोट
आइ सभ मिलि लगाउ एकटा नारा।

कहबैत छी बुझनुक मनुक्ख मुदा
बँटवारा कऽ तकैत छी अपने टा सुख
एक बेर सामाजिक एकता लेल तँ सोचू
गोत्र सगोत्रक फरिछौटमे आबो तँ ओझराएब छोरू।

हम छी मिथिला केर मैथिल
हमर ने कोनो जाति अछि
सभ मिलि मिथिलाक मान बढ़ाएब
आइ सभसँ ''किशन'' एतबाक नेहोरा करैत अछि।

एक्कइसम शताब्दीक नवका एकटा ई सोच
नै कोनो भेदभाव नै कोनो जाति-पाति
सभ मिलि हँसी खुशीसँ करब एकटा भोज
एक्के छी सभ मैथिल गीत गाउ आइ भोरे-भोर।

सबहक देहक खून एक्के रंग लाल अछि
मुदा तइयो जातिक नामपर बँटवारा भऽ गेल अछि
सपत खाउ आ सभ मिलि लगाउ एकटा नारा
आब नै करब धर्म जातिक नामपर हिन्दुस्तानक बँटवारा।

भिन भिनौज

आइ अपने भैयारीमे कऽ रहल छी कटवा-कटौज
भऽ रहल अछि अपने भैयारीमे भिन भिनौज
बाबू जी अनैत छलाह किछु नीक निकौत
तँ दुनू भाइ करैत छलहुँ खूम घोंघाउज

एक्के थारीमे बैसि कऽ खाइत छलहुँ
मुदा एहेन बँटवारा नै देखल
ओ नै हमरा देखैत अछि, हम नै ओकरा
कनेक बुरबकी, भिन भिनौज सेहो करेलक।

बाबू जी केर मोन दुखित भेलनि ककरो आब आस नै
ओ कहै छै हम नै देखबै भैयाक पार छै
हम कहैत छिऐ हम किए देखबै छोटकाक पार छै
मरैऽ बेरमे आब बुढ़बाकेँ एक लोटा पानि देनिहार कियो ने!

छोटकी पुतहु झाँउ झाँउ कऽ रहल अछि
तँ सैझलियो कोनो दशा बाँकी नै रखने अछि
ई कटवा कटौज आइ अपनेमे भऽ रहल अछि
एहेन भिन भिनौज देखि बुढ़बा शोक संतापे मरि रहल अछि।

झर झर बहि रहल अछि बुढ़बाक आँखिसँ नोर
एसकरे कुहरि रहल छथि मुदा केकरा करताह सोर
सभ किछु एक रंगे बाँटि देलाक बादो
पुतहु मुँह चमकबैत अछि तँ बेटा खिसियाइत अछि भोरे भोर।

हमरा सुखचेनसँ मरऽ दिअ ने
सभसँ बुढ़बा नेहोरा कऽ रहल छथि
मुदा जल्दी मरि जाउ घरक गारजीयन ई बुढ़बा
सभ मिलि हुनका गंगा लाभ करा रहल छथि।

गंगा लाभ करबिते मातर थरथरा कऽ मरि गेलाह
ओइ दुनू कपूतक बाप ओ अभागल बुढ़बा
ई सुनि आइ 'किशन' बहा रहल अछि नोर
कठियारी जेबाक लेल केकरा करत सोर।

हाइ रे आधुनिक बेटा पुतहु ई की
जिबैत जिनगी माए बापक सत्कार नै करै छी
मुदा हुनका मरलाक बाद ई की
पाँच गाम लऽ पूरी जिलेबीक भोज किए करै छी?

केकरासँ कहू ओइ बुढ़बाक दुःख तकलीफ
अपटी खेतमे चलि गेल प्राण हुनकर
एहेन नै देखल ई कटवा कटौज
'कारीगर' करैत अछि नेहारा नै करू एहेन भिन भिनौज।

वीर जवान

मातृभूमिक रक्षा लेल
शहीद भऽ जाइत छथि वीर जवान
समहारने छथि ओ देशक सिमान
नमन करैत छी हम अहाँ छी वीर जवान।

मरब की जियब
तेकर नै रहैत छनि हुनका धियान
मुदा देशक रक्षा लेल ओ सदखनि
न्योछावर करै छथि अपन जान।

सैनिक छथि ओ इन्सान
देशक दुशमन पर रखैत छथि धियान
आतंकवादीक छक्का छोड़ा दैत छैक
परमवीर छथि हिन्दुस्तानक वीर जवान।

महान छथि ओ बीर जवान देशक खातिर
जे हँसैत-हँसैत देलखिन अपन बलिदान
भारतवासी गर्व करैत अछि अहाँ पर
नै बिसरत कहियो अहाँक त्याग आओर बलिदान।

सीमा पारसँ केलक आतंकी हमला
कऽ देलिऐ आतंककेँ मटियामेट अहाँ
भऽ गेलौं अपने लहु-लुहान मुदा
आतंकसँ बचेलहुँ सबहक जान।

कारगीलसँ कुपवाड़ा तक
आतंकवादीसँ लैत छी अहाँ टक्कर
अहाँक वीरता देखि कऽ
अबै छै ओकरा चक्कर।

वीर जबान यौ वीर जवान
समहारने छी अहाँ देशक सिमान
कोना कऽ हेतै देशक रक्षा
सदखनि अहाँ रहै छी हरान।

दहेज

दहेजक नाम सुनि कऽ
काँपि उठैत अछि माए-बापक करेज
कतबो छटपटायब तँ
लड़काबला कम नै करताह अपन दहेज।

ओ कहताह जे बियाह करबाक अछि
तँ हमरा देबैए पड़त दहेज
पाइ नै अछि तँ
बेच लिअ अपन जमीनक दस्तावेज।

दहेज बिना कोना कऽ करब
हम अपना बेटाक मैरेज
दहेज नै लेला सँ खराब होएत
समाजमे हमर इमेज।

ऐहि मॉडर्न जुगमे तँ
एहेन होइत अछि मैरेज
आएल बरियाति घूरि कऽ जाइत छथि
जँ कनियो कम होइत अछि दहेज।

मादा भ्रूण आओर नव कनियाँक
जान लऽ लैत अछि ई दहेज
ई सभ देखि सूनि कऽ
काँपि उठैत अछि 'किशन' के करेज।

समाजकेँ बरबाद केने
जा रहल अछि ई दहेज
बचेबाक अछि समाजकेँ तँ
हटा दियौ ई मुद्रारूपी दहेज।

खाउ अखने सपत/ करू प्रतिज्ञा
जे आब नै माँगब दहेज
बिन दहेजक हेतै आब सभ ठाम
सबहक बेटीक मैरेज।

देशक चिन्ता

किनको छनि स्वार्थक चिन्ता
किनको छनि घूस लेबाक चिन्ता
नेता सभकेँ अछि कुर्सीक चिन्ता
मुदा किनको नै अछि देशक चिन्ता।

चुनाव जितलाक बाद कुर्सी भेटलन्हि नेताजीकेँ
भऽ गेलाह निफिकीर
मुदा भाषणेटामे खिचैत छथि
आर्थिक विकासक लकीर।

भूखे मरैत अछि गरीब जनता
ऐ बातक हुनका नै छनि कोनो चिन्ता
शहीद होइत छथि देशक सीमापर जुआन
कानब तँ दूरक गप श्रद्धांजलियो दै लेल नै औता।

नेता सभ मंत्रालय लेल छथि परेशान
कियो स्वार्थ सिद्धिक लेल अछि हरान
कियो भूखे मरि जाए, कियो दहा जाए बाढ़िमे
मुदा हुनका नै जेतनि मरल लोकपर धियान।

घूस खाइत-खाइत भऽ गेलाह भ्रष्ट
मुदा खादिक अंगा पहिर अपनाकेँ बुझै छथि श्रेष्ठ
कोना कऽ हेतै आर्थिक विकास
नै सोचैत छथि नै छनि चिन्ता।

सभ पार्टीकेँ तँ अछि कुर्सीक चिन्ता
मुदा किनको नै अछि देशक चिन्ता

दौगल चलि जाएब गाम

मनुक्ख दौगि रहल अछि मचल अछि आपा-धापी
जतए केकरो कियो ने चीन्हि रहल अछि
एहेन नगर आ पाथर हृद्यसँ दूर
एखने होइए जे दौगल चलि जाएब गाम।

लोहाक छड़ आ सीमेंट कंक्रीटसँ बनल
ओना तँ ई एकटा आधुनिक महानगर अछि
मुदा शहरक ऐहि आपा-धापीमे
मनुक्खक हृदए जेना पाथर भऽ गेल अछि।

किए मचल अछि आधुनिकताक ई हरबिर्रो
कि भेटत ऐ सँ/ कियो ने किछु बूझि रहल अछि
जेकरे देखू रूपैयाक ढ़ेरी लेल अपसियाँत रहैत अछि
पाथर हृदए मनुक्ख/ मानवताक मूल्य केने अछि जीरो।

लिफ्ट लागल ओ दसमंजिला मकान
एक्के फलैटपर रहितो लगैत छी अनजान
ओ अड़ोसी हम पड़ोसी मुदा
एक दोसरकेँ नै कोनो जान-पहिचान।

कहू एहेन कंक्रीटक शहर कोन काजक ?
आधुनिकताक काल कोठरी अछि साजल
ऐहि चमचमाइत कोठरीमे कियो ने केकरो चिन्हि रहल अछि
रूपैयाक खातिर आबक मनुक्ख की की ने कऽ रहल अछि।

अतियौत-पितियौत ममियौत-पिसियौत जेकरा देखू
अपनेमे मगन चिन्हा परिचएसँ कोन काज
आधुनिकताक काल कोठरीमे आब
अनचिन्हार भऽ गेलाह जन्मदाता बूढ़ माए-बाप।

शहरक एहेन अमानवीय आपा-धापी देखि कऽ
पसीज गेल हमर हृदए
एहेन अनचिन्हार नगर छोड़ि कऽ मोन होइए
एखने आब दौगल चलि जाएब गाम।

हे यौ भलमानुस आधुनिक मनुक्ख
एहेन अनचिन्हार नगर ने नीक
ऐ कंक्रीटक महलसँ एक बेर तँ देखू
गामक कोनो टुटली मरैया बड्डु नीक।

मनुक्ख एक दोसरकेँ चिन्हि रहल अछि
चिड़ै चुनमुन चाँ चूँ कऽ रहल अछि
रस्ता-पेरा निश्छल प्रेमक धार बहि रहल अछि
हरियर-हरियर खेत-पथार आइ सोर कऽ रहल अछि।

टुटलाहा टाट खर-पतारक किछु घर
जतए नै कियो अनचिन्हार नै कोनो डर
चौबटिया लग फड़ैत अछि खूम आम
एहने नगरकेँ औ बाबू लोग कहैत छैक गाम ।

एकटा तँ ओ छलीह

कनैत छलहुँ माए गे माए/ बाप रौ बाप
हे रौ नंगट छौंरा रह ने चुपचाप
नुनू बाबू कऽ ओ हमरा चुप करा दै छलीह
एकटा तँ ओ छलीह।

बापे-पुते कऽ कनैत छलहुँ कखनो तँ
ओ हमरा दूध-भात खुआ दै छलीह
बौआक मुँहमे घुटुर-घुटुर कहि ओ
अपन आँखिक नोर पोछि हमरा हँसबैत छलीह।

खूम कनैत-कनैत केखनो हम बजैत छलहुँ
माए गे हम कोइली बनि जेबौ
नै रे बौआ नीक मनुक्ख बनि जो ने
आओर कोइली सन बोल सभकेँ सुनो ने।

केखनो किछु फुरायत छल केखनो किछु
नाटकमे जोकर बनि बजैत छलहुँ बुढ़िया फूसि
मुदा तैयो ओ हँसि कऽ बजैत छलीह
किछु नव सिखबाक प्रयास आओर बेसी करी।

रूसि कऽ मुँह फुला लैत छलहुँ
तँ ओ हमरा नेहोरा कऽ मनबैत छलीह
कतौ रही रे बाबू मुदा मातृभाषामे बजैत रही
अपना कोरामे बैसा ओ एतबा तँ सिखबैत छलीह।

मातृभाषाक प्रति अपार स्नेह गाम आबि
नान्हि टा मे हुनकेसँ हम सिखलहुँ
गाम छोड़ि परदेशमे बसि गेलहुँ
मुदा मैथिलीक मिठगर गप नै बिसरलहुँ।

अवस्था भेलाक बाद ओ तँ चलि गेलीह ओतए
जतएसँ कहियो ओ घूमि कऽ नै औतीह
मुदा माएक फोटो देखि बाप-बाप कनैत छी
मोनमे एकटा आस लगेने जे कहियो तँ बुढ़िया औतीह।

समाजक लोक बुझौलनि नै नोर बहाउ औ बौआ
बुढ़िया छेबे नै करथि ऐ दुनियाँमे
तँ की आब ओ अपना नैहरसँ घूरि कऽ औतीह
मरैयो बेरमे बुढ़िया अहाँकेँ मनुक्ख बना दए गेलीह।

बुढ़ियाक मुइलाक बाद आब मइटुग्गर भऽ गेल 'किशन'
ओइ बुढ़ियाक हम करैत छी नमन
अपन बिपति केकरासँ कहू औ बौआ
कियो आन नै ओ बुढ़िया तँ हमर माए छलीह।

गलचोटका वर
(हास्य कविता)

देखू देखू हे दाइ-माई
केहेन सुनर छथि गलचोटका वर
तिलकक रूपैया छनि जे बाँकी
सासुरमे खा नै रहल छथि एक्को कर।

अनेरे अपसियाँत रहैत छथि
अल्लूक तरूआ छनि हुनका गारामे अटकल
खाइत छथि एक सेर तीन पसेरी
मुदा देह सुखाएल छनि सनठी जकाँ छथि सटकल।

केने छथि पत्रकारिताक लिखाइ-पढ़ाई
दहेजक मोहमे छथि भटकल
आँखिपर लागल छनि बड़का-बड़का चश्मा
मुँह कान नीक तँ चइन छनि आधा उजरल।

ओ पढ़ल छथि तँ खूम बड़ाइ करू ने
मुदा हमरा पढ़नाइक कोनो मोजर ने
बाबू जीकेँ कतेक कहलियनि जे हमरो पसीन देखू
मुदा डॉक्टर इंजीनियर जमाए करबाक, मोह हुनका छूटल ने।

जेना डॉक्टर इंजीनियरे टा मनुख होइत छथि
लेखक समाजसेवीक एको पाई मोजर ने
सोच-सोचक फर्क अछि मुदा केकरा बुझाउ
दुल्हाक बजार अछि सजल खूम रूपैया लूटाउ ने।
एहि बज़ारमे अपसियाँत छथि लड़कीक बाप
इंजीनियर जमाए कऽ छोड़ै छथि अपन सामाजिक छाप
ऐ लेल तँ अपसियाँत छथि एतबा तँ ओ करताह
बेटीक नीक जिनगी लेल ओ किछु नै सोचताह।

अहाँ बेटीकेँ नीक जकाँ राखब/ दहेज लैत काल
हमरा बाबूकेँ ओ तँ बड़का सपना देखौलनि
ई तँ बादमे बुझना गेल जे किछुए दिनक बाद
दहेजक रूपैयासँ ओ पानक दोकान खोललनि।

नै यौ बाबू हम नै पसिन करब एहेन सुनर वर
एतबा सोचिए कऽ हमरा लगै अछि डर
भले रहि जाएब हम कुमारि मुदा
कहियो ने पसिन करब एहेन दहेज लोभी गलचोटका वर।

गरीब

हम छी गरीब
नै आब दै छथि
हमरा कियो अपना करीब
किए तँ हम छी गरीब।

भरि दिन भुखले रहि कऽ
किछु काज राज करै छी
मुदा तैयो दू टा रोटी
लिखल नै अछि हमरा नसीब।

जेकरे मौका भेटैत छन्हि
वएह हमर शोषण करैत अछि
किछु बाजब तँ बोइनो नै भेटत
डरे हम किछु नै बजैत छी।

डेग डेगपर भ्रष्टाचार
एसगर हम केकरासँ लड़ब
धिया पुता अन्न बिनु बिलखि रहल अछि
कहू कोना कऽ हम जिअब।

ठिकेदारो हमरे कमाइ लूटि रहल अछि
जेबीमे नै अछि एक्को टा टाका
नून रोटी खा कहुना कऽ रहि जइतहुँ
मुदा बढ़ल मँहगाइ गरीबक घर देलक डाका।

टाकाक अभावमे आब हम
बनि गेलहुँ अस्पतालक मरीज
डॉक्टरो हमरा देखि कहैत छथि
तूँ दूरे रह नै आ हमरा करीब।

विधाता केहेन रचना केलनि
जे हमरा बनौलन्हि गरीब
नै आब दैत छथि
हमरा कियो अपना करीब।

आब अहीं कहू यौ समाजक लोक
अधपेटे कोना जिबैत छी हम
गरीबीक दुश्चक्र अछि घेरने
जिनगी जीबाक आस भेल आब कम।

जी तोड़ मेहनति करए चाहैत छी
मुदा कतए भेटत सभ दिन काज
काज भेटलोपर होइत अछि शोषण
एनामे कोना करब धीया पुताक पालन पोषण।

साँझ भिनसर दू टा रोटी भेटैए
एतबा आस लगेने अछि गरीब
नीक निकौत सेहन्तो नै सोचैत छी
किए तँ हम छी गरीब।

हाकिम भऽ गेलाह

किएक चिन्हता आब कका
ओ तँ हाकिम भऽ गेलाह
अबैत रहैत छथि कहियो कऽ गाम
मुदा अपने लोकसँ अनचिन्हार भऽ गेलाह।

जुनि पूछू यौ बाबू हाकिम होइते
ओ की सभ केलाह
बूढ़ माए-बापेकेँ छोड़ि कऽ असगर
अपने शहरी बाबू भऽ गेलाह।

आस लगेने माए हुनकर गाम आबि
बौआ करताह कनेक टहल-टिकोरा
नै पड़ैत छनि माए-बाप कहियो मोन
मुदा खाइमे मगन छथि पनीरक पकौड़ा।

झर-झर बहए माएक आँखिसँ नोर
किएक नै अबै छथि हमर बौआ गाम
मरि जाएब तँ आबिए कऽ की करबहक
हाकिम होइते किएक भेलह तोँ एहेन कठोर।

ई सुनतहि भेल मोन प्रसन्न
जे अबैत छथि कका गाम
भेंट होइते कहलियनि कका यौ प्रणाम
नै चिन्हलिअ तोरा बाजह अपन नाम।

आँखि आनहर भेल कि देखैत छिऐ कम?
एना किएक बजैत छह बाजह कनेक तूँ कम
आइ कनेक बेसिए बाजब हम
अहूँ तँ होएब बूढ़ औरदा अछि कनेक कम।

कि थिक उचित की थिक अनुचित
मोनमे कनेक अहाँ विचार करू
'किशन' करत एतबाक नेहोरा
जिबैत जिनगी माए-बापक सतकार करू।

नै तँ टुकुर-टुकुर ताकब असगर
अहींक धीया पुता अहाँकेँ देखि परेताह
बरू जल्दी मरि जाए ई बुढ़बा
मोने-मोन ओ एतबाक कहता।

हमरो जीबऽ दिअ

कोइखेमे छटपटा रहल छी हम
ई दुनियाँ हमरो देखऽ दिअ
बेटी भऽ कऽ जनम लेनहि कोनो अपराध नै
बाबू यौ ई जिनगी हमरो जीबऽ दिअ।

डाक्टरक आला कहि रहल अछि
नै बचतहु आब तोहर प्राण
अल्ट्रासाउण्डक रिपोर्ट किछुए कालमे
आब लऽ लेतहु तोहर जान।

करेलहुँ अल्ट्रासाउण्ड यौ बाबू
मुँह भेल अहाँक मलीन
डाक्टर संगे केलहुँ ई प्लान
कोइखेमे ऐ बेटीकेँ कऽ दिहक क्लीन।

हम बुझैत छी हमरा जनमलाक बाद
नै बाँटब अहाँ जिलेबी बुनिया
दुखित भेल अछि मोन अहाँक/ नै आनब
हमरा माए लेल नाक केर नथुनियाँ।

जँ होइतहुँ हम बेटा
करितहुँ अहाँ सगरे अनघोल
अड़ोसी-पड़ोसी शुभकामना दितथि
रसगुल्ला बँटितहुँ अहाँ टोले-टोल।

बेटीक जनम भेलापर एहेन बेइमानी किएक
आइ किछु हमरो कहऽ दिअ
बेटी भऽ कऽ जनम लेनहि कोनो अपराध नै
बाबू यौ ई जिनगी हमरो जीबऽ दिअ।

कक्का हमर उचक्का

(हास्य कविता)

ओंघराइत पोंघराइत हरबड़ाइत धड़फराइत धांइ दिस
बान्हेपर खसलाह कक्का हमर उचक्का
होरीमे बरजोरी देखी मुस्की मारैत
काकी मारलखिन दू-चारि मुक्का।

धीया पुता हरियर पीअर रंगसँ भिजौलकनि
बड़की काकी हँसि कऽ घीचि देलखिन धोतीक ढ़ेका
पिचकारीमे रंग भरने दौगलाह हमर कक्का
अछैर पिछैर कऽ बान्हेपर खसलाह कक्का हमर उचक्का।

होरी खेलबाक नएका ई वसंती उमंग
ततेक गोटे रंग लगौलकनि मुँह भेलनि बदरंग
काकीकेँ देखैत मातर कक्का बजलाह
आई होरी खेलाएब हम अहींक संग।

कक्काकेँ देखैत मातर काकी निछोहे पड़ेलीह आ बजलीह
होरी ने खेलाएब हम कोनो अनठीयाक संग
जल्दी बाजू के छी अहाँ नै तँ मुँह छछारि देब
घोरने छी आई हम करिक्का रंग।

भौजी हम छी अहाँक दुलरूआ दिअर
होरी खेला भेल छी हम लाल पिअर
आइ तँ भैयो नै किछु बजताह जल्दी होरी खेलाउ
एहेन मजा फेर भेटत नेक्सट ईयर।
सुहर्दे मुँहे मानि जाउ यै भौजी
नै तँ करब हम कनी बरजोरी
होरीमे तँ अहाँ जबान बुझाइत छी
लगैत छी सोलह सालक छौंरी।

आस्ते बाजू अहाँक भैया सुनि लेताह
कहता 'किशन' भऽ गेल केहेन उचक्का
केम्हरो सँ हरबड़ाएल धड़फराएल औताह
छिनि कऽ फेक देताह हमर पिनी हुक्का।

आइ ने मानब हम यै भौजी
फुँसियाहिक नै करू एक्को टा बहन्ना
आइ दिउरक भौजी लगैत अछि कुमारि छौंरी
रंग अबीर लगा भिजा देब हम अहाँक नएका चोली।

ठीक छै रंग लगाउ होरीमे करू बरजोरी
आइ बुढ़बो लगैत छथि दुलरूआ दिअर
ई सुनि पुतहूकेँ भौजी बुझि होरी खेलाइ लेल
बान्हेपर दौगल अएलाह कक्का हमर उचक्का।

किछु तँ हम करब

अवस्था भेल हमर आब बेसी
टुघैर -टुघैर हम चलब
अहाँ आगू आगू हम पाछू पाछू मुदा
अपना माटि पानि लेल किछु तँ हम करब।

नुनु बौआ अहाँ आउ
बुच्ची दाइ अहूँ आउ
दुनू गोटे मिलि जल्दीसँ
मैथिली पढ़ि किछु खिस्सा सुनाउ।

नान्हि टा मे बजलहुँ एखनो बाजू
मातृभाषामे बाजू अहाँ निधोख
कनी अहूँ बाजू कनेक हमहूँ बाजब
नै बाजब तँ कोना बुझत लोक?

परदेश जाइत मातर किछु लोक
बिसरि जाइ छथि मातृभाषाकेँ
अहीं बिसरि जाएब तँ आजुक नेना कोना बुझहत
केहेन मिठगर सुआद होइत अछि मातृभाषाक।

कोना होएत अप्पन माटि पानिक आर्थिक विकास
सभ मिलि एकटा बैसार करू
कनेक सोचू सबहक अछि ई दायित्व
किछु विचार हम कहब किछु तँ अहूँ कहू।

हमरो अहाँक किछु कर्तव्य बनैत अछि
ऐहि परम कर्तव्यसँ मुँह नै मोड़ू
स्नेह राखू हृदैमे सभकेँ गारा लगाउ
अपना माटि पानिसँ सभ लोककेँ जोड़ू।

समाजक लोक अपनेमे फुटवैल केने अछि
मनसुख देशी तँ धनसुख परदेशी
एक्के समाजमे रहि एना जुनि करू?
एकजुट हेबाक प्रयास आओर करू बेसी।

एक भऽ एक दोसरक दुख दर्द बुझब
अनको लेल किएक नै कतेको दर्द सहब
आइ एकटा एहने समाजक निर्माण करब
जिबैत जिनगी किछु तँ हम करब।

हमरो अछि एकटा सेहन्ता
एक ठाम बैसि सभ लोक अप्पन भाषा बाजब
औरदा भेल आब कम मुदा जिबैत जिनगी
अपना माटि पानि लेल किछु तँ हम करब।

किडनी चोर

देखू-देखू केहेन जमाना आबि गेल
मनुखक ह्रदए भऽ गेल केहेन कठोर
सभसँ मुँह नुकौने चुपेचाप
भागि रहल अछि एकटा किडनी चोर।

डॉक्टर भऽ कऽ करैत अछि डकैति
कोनो ग़रीबक बेच लैत अछि किडनी
पुलिस तकैत अछि ओकरा इंडियामे
मुदा ओ पड़ा जाइत अछि सिडनी।

कोनो ग़रीबक किडनी बेचि कऽ
संपति अरजबाक केहेन ई अमानवीय भूख
केकरो मजबूरीक फाएदा उठा कऽ
डॉक्टर तकैत अछि खाली अपने सुख।

केकरो जिनगी बचौनिहार डॉक्टर रूपयाक लोभमे
बनि गेल आब किडनी चोर
छटपटा रहल अछि एकटा गरीबक करेजा
कनैत-कनैत सुखा गेलै ओकर आँखिक नोर।

मनुक्ख आब केहेन लोभी भऽ गेल
आब ओ किडनी बेचब सेहो सीखि गेल
राता-राती अमीर बनबाक सपना देखैत अछि
रूपया खातिर ओ किछु कऽ सकैत अछि।

मनुख भऽ कऽ मनुखक घेंट काटब
कोन नग्रमे सिखलहुँ अहाँ
आबो तँ बंद करू किडनी बेचबाक धंधा
मानवताक नाम सगरे घिनेलहुँ अहाँ।

कोनो गरीबक किडनी बेचि कऽ
महल अटारी बनाएब उचित नै थीक
एहेन डॉक्टरीक पेशासँ कतौ
मजूरी बोनिहारी करब बड्ड नीक।

हम अहींकेँ कहै छी यौ किडनी चोर
एक बेर अपने करेजापर छूरी चला कऽ देखू
कतेक छटपटाइत छै करेजा
एक बेर अपन किडनी बेचि कऽ तँ देखू।

लिखैत रही

मोन होइए जे एक मिसिया कऽ पिबैत रही
मुदा कहियो कऽ किछु किछु लिखैत रही
कनेक हमरो गपपर धियान देबै
मोन होइए जे पाठक सभसँ भेंट करैत रही।

ग़ालिब सेहो एक मिसिया कऽ पिबैत छलाह
मुदा किछु-किछु तँ लिखैत छलाह
अपना लेल नै पाठक लोकनिक लेल
मुदा बड्ड नीक लिखैत छलाह।

पद्य लिखनाइ तँ आब हम सीख रहल छी
हमरा तँ नै लिखबाक ढंग अछि
मुदा किछु नीक पद्य लिखि नेनपनसँ
एतबाक तँ हमर सख अछि।

की लिखू किछु ने फुरा रहल अछि
बढलैए मँहगाइ तँ अधपेटे भुखले रहैत छी
किएक ने रहि जाइ भूखल पेट मुदा
किछु लिखबाक लेल मोन सुगबुगा रहल अछि।

पोथी लिखलनि महाकवि विद्यापति
लिखलनि पोथी बाबा नागार्जुन
किछु नव रचना जे नै लिखब
तँ कोना भेटत मैथिली साहित्यक सद्गुण।

लेखक समाजक सजग प्रहरी होइ छथि
अपना लेल तँ नै अनका लेल लिखैत छथि
कतेक लोक हुनकर आर्थिक अवस्थापर हँसैत अछि
मुदा तइयो ओ चुपेचाप लिखैत रहैत छथि।

कहू एहेन उराउल हँसीपर कोनो लेखक
एक मिसिया कऽ पीत आकि नै
अपन दुःखित भेल मोनकेँ
कखनो कऽ अपने मने हँसाउत आकि नै।

कतेक लोक गरिअबैत अछि
एक मिसिया पीब कऽ लिखब / ई किएक सीखू
मुदा आइ किशन मोनक गप कहि रहल अछि
पीबू आकि नै पीबू मुदा किछुओ तँ लिखब सीखू।

आइ हमरो मोन भऽ रहल अछि
जे एक मिसिया कऽ पिबैत रही
अपना लेल नै तँ पाठक लोकनिक लेल
मुदा किछू नव रचना लिखैत रही।

नबकनियाँ

मोन रखियौ कनेक हमरो पिया
सोलहो सिंगार कऽ बैसल छी हम असगर
भेँट होएब कहिया अहाँ/ मोनमे आस लगेने
अहाँक बाट तकैत छी हम असगर।

कौआ कुचरल भोरे-भोर
चुपेचाप हमरा केलक सोर
कहलक जल्दीए औथुन तोहर पाहुन
लिपिस्टीक लगा हम रंगलहुँ अपन ठोर।

परदेस जाइत मातर यौ पिया
किएक बिसरि जाइत छी नबकनियाँकेँ
नै बिसरब कहियो परदेसमे हमरा
सपत खाउ हमरा पैरक पैजनियाँकेँ।

जुनि रूसू अहाँ सजनी नै घबराउ यै
मोन पड़ैत छी अहाँ तँ लगैत अछि बुकोर यै
मुदा की करू नै भेटल तनखा समयपर
नै किनलहुँ अहाँक लेल लहंगा पटोर यै।

सारी पहीर हम गुजर कऽ लेब
नै चाही हमरा राजा लहंगा पटोर यौ
अहाँक सुख-दुखमे रहब सहभागी
देखितौं अहाँकेँ आँखिसँ/ झहरैत अछि नोर यौ।

अहींक वियोगमे दिन राति जरैत छी
इजोरियामे टुकुर-टुकुर अहींकेँ देखैत छी
अहींक संग ऐ बेर घूमब चैतीक मेला
मोने मोन हम एतबा नियार करैत छी।

बड्डु केलहुँ नियार अहाँ आबि कऽ देखू
मुस्की मारि रहल छी हम चौअनियाँ
जल्दी चलि आउ गाम यौ पिया
चिट्ठी लिख रहल अछि एकटा नवकनियाँ।

पियक्कर

साँझ पड़ैत देरी पीब कऽ ओंघरा जाइत छी
हम छी पियक्कर
पढ़लाहा लिखलाहाकेँ मूर्ख बुझैत
अपनाकेँ बुझैत छी लाल बुझक्कर।

धीया-पुता पढ़ैत अछि आकि नै
तेकर नै करैत छी हम खोज,मुदा पिबैत छी हम रोज
अपन काज छोड़ि कऽ व्यर्थ हम घुमैत रहैत छी
केहेन छी हम घुमक्कर हम छी पियक्कर।

पाइ सधेलौं दारूमे भऽ गेलौं हम फक्कर
महाजनक कर्ज देखि कऽ अबैत अछि हमरा चक्कर
लाधल अछि हमरा माथपर कर्जाक पहाड़
लगबैत छी कोर्ट कचहरीक चक्कर/ किएक तँ हम छी पियक्कर।

साँझ पड़ैत देरी पीबि कऽ ओंघरा जाइत छी
हम छी पियक्कर
एखने हम शपत खाइत छी जे हम नै आब पीयब
किए कहत आब कियो हमरा पियक्कर।

धीया पुताकेँ नीक स्कूल कॉलेजमे पढ़ाएब
ऐ लेल तँ लगबैत छी मधुबनी दरभंगाक चक्कर।

सेहन्ता

हमरो छल एकटा सेहन्ता औ बाबू
कहियो तँ उठी/ कहब अहाँ
आब उठू यौ बौआ भेलैए भोर
अहाँक दोस महीम कऽ रहल छथि सोर।

हिचुकै हिचुकै/ असगर हम कनैत छलहुँ
देखितहुँ अहाँ/ से छुट्टी नै भेल
हालो चाल तँ पुछितहुँ हमर
मुदा कहियो अहाँकेँ सेहन्तो नै भेल।

हमर सेहन्ता एकटा सपने रहि गेल
कहियो अहाँक हृदैमे हमर स्नेह नै भेल
कहियो ने दुलार कऽ उठेलहुँ हमरा औ बाबू
विधातो केलनि किस्मतक केहेन खेल।

सोझे पाइए टा दऽ देलासँ
बापक फर्ज़ नै पूरा भऽ जाइत छैक
हमरो बाप केखनो दुलार करितथि हमरा
अहीं कहू केकरा ने सेहन्ता होइत छैक।

एहेन विरान जिनगीसँ नीक
हमरा जनमैते किएक नै मारि देलहुँ
अपने मगनमे रहलहुँ सभ दिन
कुहरैत असगर हमरा किएक छोड़ि देलहुँ।

माएक आँचर बापक साया दुनू
कोनो छोट नेनाक होइत अछि छाया
मुदा केहेन निष्ठुर भेलहुँ अहाँ
आइ धधकि रहल अछि हमर काया।

हमर किलकारीक गूँज सुनि
कहियो दौगल अबितहुँ अहाँ
कोरामे लऽ हमरा दुलार करितहुँ
मुदा कहियो ऐहेन सेहन्ता भेल कहाँ।

नेनपनक हमर सभटा सेहन्ता
एकटा सपने रहि गेल
मुदा आबो विचार कऽ देखू
कहियो अहाँक मुँहो मलीन नै भेल।

किएक से अहीं कहू
हम कोन अपराध केने रही
हमर सभटा सख मनोरथकेँ बिसरि
अहाँ अपने मगन रही।

हमरासँ नीक कोनो अनाथसँ पूछू
केहेन बेबस होइत छैक ओकर जिनगी
अहाँक जिबैतो हम छी अनाथ
एहने बेबस भऽ गेल हमर जिनगी।

केहेन वीरान जिनगी भऽ गेल
आब नै अछि कोनो सेहन्ता
सबहक बाप सभकेँ दुलार पुचकार करथि
आब एतबे अछि कारीगरक सेहन्ता।

नोर झहरि रहल छल।

बहिन उठि नैहर सँ सासुर बिदा भेलीह
बपहारि काटि कानि रहल छलीह
हमहूँ बाप बाप कानि रहल छलहुँ
आखि सँ टप टप नोर झहरि रहल छल।

माए गे माए भैया औ भैया
एसगर हम आब जा रहल छी
भरदुतिया मे आएब अहाँ
एतबाक आस लगेने हम जा रहल छी।

छूटल नैहर केर सखी बहिनपा
आब मोन पड़त सब साँझ भिंसरबा
छूटल बाबू केर दुअरिया
डोली उठा लऽ चल हो कहरबा।

जाउ जाउ बहिन जाउ अहाँ अपना गाम
भरदुतिया मे आएब हम अहाँक गाम
माए हमर पुरी पका कए देतीह
हम नेने आएब चिनीया बदाम ।

जुनि कानू बहिन पोछू आखिक नोर
आब सासुर भेल अहाँक अप्पन गाम
सास ससुर केर सेबा करब
व्यर्थ समय गमा नहि करब अराम।

जेहने अप्पन माए बाप
तेहने सास ससुर
नहि करब कहियो झग्गर दन
लोक लाज केर राखब धियान।

भैया यौ भैया अहाँ ठीके कहैत छी
नहि करब हम केकरो स झगरदन
सभ सँ मिली जुलि के हम रहब
गृहलक्ष्मीक दायित्व केर करब निरवहन।

मुदा कोना कऽ कहू औ भैया
छूटल नैहर बिदा भेल छी सासुर
माए कनैत अछि बाबू के लगलैन बुकोर
टप टप झहरि रहल अछि आखि सँ नोर।

धैरज राखू बहिन जाउ एखन अपना गाम
राखि मे चलि आएब नैहर बाबू केर गाम
हँसी खुशी सँ गीत गाएब
सभ सखी मिली समा चकेबा खेलाएब।

सभ के प्रणाम कऽ बहिन बिदा भेलीह
मुदा स्नेह सऽ कानि रहल छलीह
दुनू भाए बहिन कानि रहल छलहुँ
आखि सँ टप टप नोर झहरि रहल छल।

पुरस्कार लऽ के नाचू
(हास्य कविता)

केकरो सऽ चिन्हा परिचे अछि 'कारीगर'
नहि यौ सरकार तऽ अहिं कहू की हम करू
तऽ आउ हमरे सँ चिन्हा परिचे कए लियअ
आ पुरस्कार लऽ के नाचू।

अपने कुटुम बैसल छथि
अकेडमी आ चयन बोर्ड मे
लिख्खा परही करबाक कोन काज
तिकड़मबाजी कए लगबै छी पुरस्कारक भाँज।

हिनके कृपा सँ भेटल पुरस्कार
खुशी सँ लागल बोखार
कविता कहानी तऽ तेरहे बाईस मुदा
पुरस्कार लेल लगेलहुँ खूम जोगार।

अहाँ जे लिखलहुँ कारीगर
ओ लागल बड्डु नूनगर
मुदा बिनमतलबो हम जे लिखलियै
ओ लागल बड्डु चहटगर।

बिनमतलब के कथा साहित्य पर
अकेडमी सँ एक दिन आयल हकार
कुटुम बैसले रहथि ओहि ठाम
टटके टटकी हमरा भेटल पुरस्कार।
आन कतबो नीक किएक ने लिखलक
मुदा ओकरा ने कहियो आएत हकार
नहि छै ओकरा कोनो चिन्हा परिचे
पिछलगुआ टा के जल्दी भेटत पुरस्कार।

पुरस्कारक बदरबाँट भऽ रहल अछि
जाति वर्गक नाम पर लेखक के बाँटू
जूनि पछुआउ, पिछलगुआ सभ आउ आगू
अहाँ पुरस्कार लऽ के खूम नाचू।

साहित्यक मठाधीश सभ
शुरू केलैन पुरस्कार
यथार्थवादी चितंक आ लिखनिहार
हुनका लेल भऽ गेलैथ बेकार।

एक्को मिनट देरी नहि अहाँ करू
हुनके गुणगान कए कथा अहाँ बाचू
नहि तऽ जिनगी भरि पाछुए रहि जाएब
पुरस्कारक जोगार मे जीजान सँ लागू।

अहि दुआरे पछुआले रहि गेल कारीगर
कहियो ने केलक केकरो आगू-पाछू
देखैत छियै आब हम दोसर पुरस्कार दुआरे
जोगार लगा करैत छी हुनकर आगू-पाछू।

बेस त बड्डु बढ़िया हम शुभकामना दैत छी
दोसर पुरस्कार अहाँ के जल्दीए भेट जाए
जल्दी जोगार मे अहाँ लागू
अहाँ पुरस्कार लऽ के खूम नाचू।

चाह पीबू।
(हास्य कविता)

हरबड़ी मे जुनि ठोर पकाउ यौ नेता जी
दिल्लीक कुर्सी भेटल सूखचेन सँ अहाँ बैसू
आउ हम बेना डोला दैत छी
फूकी फूकी अहाँ गरम-गरम चाह पीबू।।

भूखे मरि रहल अछि जनता मरअ दियौअ ओकरा
नहि कोनो चिन्ता अहाँ के कोन अछि बेगरता
संसद के कुर्सी पर बैसल अराम अहाँ करू
करिक्का रूपैया स बैंक बैलेंस अहाँ भरू।।

मूर्ती बनबै सँ रथ यात्रा करै लेल पाई अछि
मुदा रोटी रोजगार हेतू एक्को टा पाई नहि अछि
फुसयाँहीक चुनावी घोषणा पर घोषणा टा करू
कुर्सी भेटल तऽ घोटाला पर महाघोटाला टा करू।।

बाजि गेल चुनावी पीपही
राजनैतिक गठजोड़ जल्दी अहाँ करू
जुनि पछुआउ सियासी कुर्सी अहाँ ताकू
फेर पाँच साल जनता के बेकूफ बनाएल करू।।

दुनियाक सभ सँ नमहर लोकतंत्र
बनि गेल वोट बैंकक भेड़तंत्र
सम्प्रदायिकता के आगि मे जनता के झरकाउ
कुर्सी हथियाबै लेल रचू कोनो नबका षड्यंत्र।।
पहिने कुर्सी फेर मंत्रालय कोना भेटत
सभटा छल प्रपंच अखने अहाँ करू
हे यौ लोकप्रिय भलमानुष जनप्रतिनिधी
संसदो मे अहाँ खूम मुक्कम मुक्की करू।।

कुर्सीक खातिर देशक संसाधन बेचलहुँ
बाँचल खूचल सेहो एक दिन अहाँ बेचू
जनता भूखे मरि गेल ओ बिलैटि गेल
मुदा साले साल राजनैतिक रोटी अहाँ सेकू।।

मँहगाइ भूखमरी कोनो समाधान ने कराउ
कृषि मंत्रालय मे राखल अन्न अहाँ सड़ाउ
संसद के कैंटीन में सरकारी सब्सिडी लगाउ
चिकन कोरमा शाही पनीर भरिपेट अहाँ खाउ।।

घोटाला पर महाघोटाल सभ केलहुँ
तइयो ने पेट अहाँ के भरल
मिठ बोली बाजि जनता के ठकलहुँ
एक्को दिन भूखले पेट होएत अहाँ के रहल।

कतेको लोक भूखले मरि गेल बेकार भेल अछि किएक
संसद भवन सऽ एक दिन बाहर निकलि अहाँ तऽ देखू
की भा परैत छैक एक्के दिन मे बुझिए जेबैए
बिना किछ खेन्ने एक दिन भूखले रहि के अहाँ देखू।।

मुदा कोनो चिन्ता नहि आब कुर्सी भेटिए गेल
संसद भवन मे सूखचेन सऽ अहाँ बैसू
'कारीगर' बेना डोला दैत अछि
फूकी फूकी अहाँ गरम-गरम चाह पीबू।।

करीक्का रूपैया।

(हास्य कविता)

नेहोरा करैत करैत मरि गेल 'कारीगर'
नहि लियअ आ ने दियअ करीक्का रूपैया
मुदा ई की कोनो काज करेबाक अछि
तऽ कहल जायत जल्दी लाउ करीक्का रूपैया।

मौका भेटला पर सरकारी बाबू नहि छोड़त
रूपैया बिन एक्को टा काज ने होएत
अहाँ फायल लऽ व्यर्थ घूमैत छी यौ भैया
काज करेबाक अछि तऽ जल्दी लाउ करीक्का रूपैया।।

कहलहुँ तऽ स्वीस बैंक मे खाता खोलाएब
चुपेचाप पार्टी ऑफिस मे चंदा जमा कराएब
जीबैत जिनगी हम अप्पन मुर्ती बनाएब
मोन होएत तऽ विदेश यात्रा पर जाएब।।

कतबो हल्ला करब तै सऽ की
स्वीस बैंक मे जमा रहत करबै की
लुटा रहल अछि सरकारी खजाना
अहुँ लुटु हमहुँ लुटैत छी, जमा करू करीक्का रूपैया।।

भ्रष्टाचाराक ढ़ेरीऔलहा संपति हमरे छी
एहि दुआरे पक्ष-विपक्ष मे झगरा भेल औ भैया
एक दोसराक मुँह पर करीक्का स्याही फेकलक
राजनैतिक घमासान मचा देलक करीक्का रूपैया।।
रामलीला मैदान मे जनआंदोलन भेल
लोकपाल पर कोनो ठोस कारवाई ने भेल
सरकार फोंफ काटि रहल अछि बुझलहुँ की
साफ सुथरा लोकपाल कहियो आउत ने।।

भ्रष्टाचार मे खूम नाम कमेलहुँ मुदा
तइयो संतोष नहि भेल औ भैया
भ्रष्टाचाराक रोटी खा देह फुलाउ
संपैत ढ़ेरियाउ अहाँ जमा करू करीक्का रूपैया।।

दुनियाक सभ सँ नमहर लोकतंत्र मे
कुर्सी हथिएबाक होड़ मचल अछि
अहाँ जुनि पछुआउ गठजोड़ करू यौ भैया
चुपेचाप अहाँ जमा करू करीक्का रूपैया।।

हल्ला-गुल्ला करने किछ काज ने होएत
बिना किछ लेने-देने फायल ने घुसकत
ईमानदारी सऽ किछो नहि, तकैत की छी?
जल्दी जेबी गरम करू लाउ अहाँ करीक्का रूपैया।।

हँ मे हँ मिलाऊ
(हास्य कविता)

खादिक अंगा पहिर पार्टि ऑफिस मे जल्दी आऊ
शहर बजार खूम दंगा कराऊ
करू चापलूसी एक्को रति ने लजाऊ
नेता जी के हँ मे हँ मिलाऊ।

चुनावी घोषणा भऽ गेल तऽ
टिकट लेल खूम जोर लगाऊ
देखब कहिं टिकट ने कटि जाए
तहि दुआरे हुनके हँ मे हँ मिलाऊ।

एहि बेर टिकट ने भेटल तऽ
पार्टि ऑफिस के खूम चक्कर लगाऊ
आलाकमान के गप मानू हुनका लेल जिलेबी छानू
अहाँ टिकट दुआरे हुनके हँ मे हँ मिलाऊ।।

क्षेत्रक विकास लेल तऽ
हम ई करब ओ करब
कोनो ठीक नहि चुनाव जीतलाक बाद
अहाँ अप्पन जेबी टा भरब।।

घोषणा पत्र मे रंग बिरंगक ऑफर
चुनावी जनसभा मे खूम चिचियाउ
एलक्सन जीतलाक बाद किछु ने करू
सरकारी रूपैया सँ विदेश यात्रा पर जाऊ।।
नहि लोकसभा तऽ विधानसभा
एहि बेर नहि तऽ अगिला बेर
टिकट तऽ चाहबे करी किछु करू
अहाँ कोनो बड़का नेता के पैर पकरू।।

एलक्सन लड़ब हारब की जीतब
ई तऽ बड्डु नीक धंधा छैक
एहेन रोजगार फेर नहि भेटत
एकरा आगू आन चिज तऽ मंदा छैक।।

जतैए देखू ततैए एलेक्सन
साहित्य खेल आ संसद भवन
सभ ठाम भेटत एकर कनेक्सन
कुर्सी भेटत कि नहि तकरे अछि टेंशन।।

देशक जनता जाए भांड़ मे
हमरा कोन अछि मतलब
अपना स्वार्थ दुआरे एलक्सन लड़ब
खुलेआम कहू एक्को रति ने लजाऊ।।

अगिला अंक मे छपत
(हास्य कविता)

रचना भेटल अहाँ के
मुदा अगिला अंक मे ओ छपऽत
बेसी फोन फान करब तऽ
फुसयाँहिक आश्वासन टा भेटत।

अहाँ के लिखल कहाँ होइए
तयइो हमरा अहाँ तंग करैत छी
हमरा तऽ लिखैत लिखैत आँखि चोन्हराएल
अहाँक रचना हम स्तरीय कहाँ देखैत छी।

रचना कोना कऽ स्तरीय हेतैय सेहो तऽ
फरिछा के अहाँ किएक नहि कहैत छी
हम रचना पर रचना पठबैत छी
मुदा अहाँ तऽ कोनो प्रत्युतरो ने दैत छी।

हम तऽ कहलहुँ अहाँ के लिखल ने होइए
नवसिखुआ के ने लिखबाक ढ़ंग अछि
कोनो पत्रिका में तऽ छैपिए जाएत
इहए टा एकटा भ्रम अछि।

ई भ्रम नहि सच्चाई थिक
नवसिखुओ एक दिन नीक लिखत
नहि छपबाक अछि तऽ नहि छापू
लिखनाहर के कतेक दिन के रोकत।
संपादक छी हम अहाँ की कए लेब?
मोन होएत तऽ नहि तऽ नै छापब
बेसी बाजब तऽ कहि दैत छी
अहाँ के कनि दिन और टरकाएब।

रचना नुकाउ आ की हमरा टरकाऊ
आँखि तरेरू अहाँ खूम खिसियाऊ
'कारीगर' ने अछि डरैए वला
किएक ने अहाँ पंचैती बैसाउ?

हे यौ वरीय रचनाकार महोदय
पहिने अहुँ तऽ नवसिखुए रही
आ कि एक्के आध टा रचना लिखी
समकालीन सर्वश्रेष्ठ बनि गेल रही ?

सच गप सुनि अहाँ के तामस उठत
तहि दुआरे किछु ने कहब, कविता हम लिखब
आश्वासन भेटिए गेल तऽ आब की
ओ तऽ अगिला अंक मे छपऽत।

अहिंटा एकटा नीक लोक छि
(हास्य कविता)

'कारीगर' कतेक दिन बाद परीक्षा पास केलक ?
ओ तऽ बड्डु बुड़िबक अछि
अहाँ त बड्डु पहिने बड़का हाकिम बनि गेलौहं
ताहि दुआरे अहिंटा एकटा नीक लोक छि।

अहाँक सफलताक राज तऽ
कहियो ने कियो कही सकैत अछि
अहाँ अपने लेल हरान रहैत छि
आ अहिंटा एकटा नीक लोक छि।

सर समाज सँ कोनो मतलब नहि रखलौहं
परदेश में दूमंजिला मकान बना लेलौहं
गाम घर सँ स्नेह रखनिहर कैं
अपनेमने अहाँ बुड़िबक बुझहैत छि।

अप्पन सभ्यता संस्कृति अकछाह लगइए
ओकरा अहाँ बिसरै चाहैत छि
परदेश में रंग-बिरंगक संस्कृति मे
अहाँ के नीक लगइए खूब मगन रहैत छि।

धियो-पूता के मातृभाषा नहि सिखबैत छि
ओकरा अंग्रेजी टा बजै लेल कहैत छि
मत्रिभाषक आंदोलन चलौनिहर बुड़िबक
आ अहिंटा एकटा नीक लोक छि।

गाम घर पछुआएल अछि रहिए दिऔ
नहि कोनो माने मतलब राखू
अहाँ ए.सी. में बैसल आराम करैत छि
अहिंटा एकटा नीक लोक छि।

सर-समाज सँ स्नेह रखलौहं तहि द्वारे
हम बकलेल बुड़िबक घोषित भेल छि
अहाँ रुपैया कमाए ढ़ेरी लगेलौहं
तहि द्वारे अहिंटा एकटा नीक लोक छि।

खली रुपैया टा चिन्हैत छि
अहाँ बिधपुरौआ बेबहर करैत छि
पाइए अहाँ लेल सभ किछु
आ अहिं टा एकटा नीक लोक छि।

कियो पहिने कियो बाद में
मेहनत करनिहार तऽ सफल हेबे करत
ओकरा अहाँ प्रोत्साहित कियक नहि करैत छि?
यौ सफलतम मनूख अहिंटा एकटा नीक लोक छि।

फोंफ काटि रहल सरकार
(हास्य कविता)

रंग विरंगक डिग्री डिप्लोमा लेने
रोड पर घूमि रहल युवक बेकार
देशक कर्ता-धर्ता चुप्पी लधने छथि
आ फोंफ काटि रहल सरकार।

बुनियादी शिक्षाक दरस एक्को मिसिया ने
खाली किताबी ज्ञान देल गेल छैक
आ परीक्षा पास कए डिग्री लेने
घूमि रहल अछि युवक बेरोजगार।

ओकरा नहि कोनो लुड़ि-भास
तोतारंटत आ परीक्षा पास
बेबहारिक जिनगी मे फेल भऽ गेल
कियो भूखले मरै अहाँ के कोन काज।

परीक्षा प्रणाली आ पाठ्यक्रम एहेन किएक
अहिं फरिछा के कहू औ सरकार
फुसियाँहिक डिग्री डिप्लोपा कोन काजक
कतेक लोक एखनो अछि बेकार।

कुर्सी पर बैसल छी तऽ कोना बुझहब
कि होइत छैक लाचारी आ बेकारी
रोजगारक अवसर बंद केलियै
कतेक बढ़ि गेल अछि बेरोजगारी।

अहिंक पैरवी पैगाम सँ
अलूइड़ लोक सभ के नोकरी भेट गेल
मुदा मेहनत क पढ़निहार सभ
पक्षपात नीति दुआरे बेकार भऽ गेल।

दू टा पद दू लाख आवेदन कर्ता
एकटा पद मंत्री कोटा सँ
विज्ञापन पूर्व फिक्स भेल अछि
बिधपुरौआ परीक्षा टा करौताह।

मेहनत कऽ ईमानदारी सँ
लिखित परीक्षा पास कऽ लेब
मुदा इंटरव्यू मे अहाँ के
तेरह डिबिया तेल जरतौह।

ईमानदारी पर अड़ल रहब 'कारीगर'
तऽ इंटरव्यू मे कैंची चलऽत
योग्यता रहैतो अहाँ भऽ जाएब बेकार
मुदा फोंफ काटि रहल सरकार।।

फुसियाँहिक झगड़ा
(हास्य कविता)

जतैए देखू ततैए देखब झगड़ा
बेमतलबो के होइए रगरम-रगड़ा
जातिवाद तऽ कियो क्षेत्रवाद के नाम पर
लोक करै फुसियाँहिक झगड़ा।

चुनावी पिपही बजैते मातर
की गाम घर, आ की शहर-बज़ार
एहि सँ किछु होना ने जोना
मुदा लोक करै फुसियाँहिक झगड़ा।

फरिछा लेब, हम ई तऽ तूं ओ
हम एहि ठामहक तूं ओई ठामहक
एक्के देशवासी रहितहु, हाई रे मनुक्ख
लोक करे फुसियाँहिक झगड़ा।

अपने देश मे एक प्रांतक लोक
दोसर प्रांतक लोक के घुसपैठी कहि
खूम राजनीतिक वाहवाही लूटैए
दंगा-फसाद, आ कि-की ने करैए

नेता सबहक करनामा देखू
ओ करैथ वोट बैंक पॉलिसी के नखरा
हुनके उकसेला पर भेल धमगिज्जर
आ लोक केलक फुसियाँहिक झगड़ा।

लोक भेल अछि अगिया बेताल
नेता नाचए अपने ताल
कछमछि धेलक चुप किएक बैसब
आऊ-आऊ बझहाउ कोनो झगड़ा।

जातिवाद के नाम पर वोट बटोरू
दंगा-फसादक मौका जुनि छोड़ू
अपना स्वार्थ दुआरे भेल छी हरान
क्षेत्रवादक आगि पर अहाँ अप्पन रोटी सेकू।

की बाबरी आ की गोधरा कांड
बेमतलब के भेल नरसंहार
कतेक मरि गेल, कतेको खबरि नहि
मुदा एखनो बझहल अछि सियासी झगड़ा।

देश समाज जाए भांड़ मे
नेता जी के कोन छनि बेगरता
जनता के बेकूफ बनाउ
हो हल्ला आ कराऊ कोनो झगड़ा।

ऐना किएक ई की ?
(हास्य कविता)

एक्के कोइख सँ जनमल दुनू
बेटा के डाक्टरी इंजीनियरिंग कराऊ
मुदा बेटी के संस्कृते सँ मध्यमा कराऊ
एहेन बेईमानी ऐना किएक ई की ?

दूल्हा अहाँ गरम-गरम खीर खाऊ
अप्पन सुखलाहा देह के फुलाऊ
दुल्हिन भुखले सन्ठी जेंका सुखाऊ
ओकरा ने अहाँ सब पढाऊ-लिखाऊ।

बेटी के पढ़ा लिखा के करब की ?
ओकरा तऽ चूल्हे फूकै लेल कहैत छी
मुदा बेटा के पढ़ा लिखा के
दाम दिग्गर में रुपैया खूब गनबैत छी।

हाय रे नारा लगौनिहार सभ
कागजी पन्ना पर बेटा बेटी एक समान
मुदा असलियत में बेटा तों स्कूल जो
बेटी तों भनसा-भात के कर ओरीयान।

दुनू तऽ अहींक संतान छी
फेर एहेन बेईमानी ई की ?
बेटियों के पढ़ा लिखा मनुक्ख बनाऊ
अहाँ ओकरो तऽ शिक्षित प्रशिक्षित बनाऊ।

बेटा के पढबय के खर्चा
अहाँ बेटीवाला सँ वसूल करैत छी
हाय रे दहेज़ लोभी दलाल
अहाँ के तैयो संतोख नहि भेल ई की ?

सामाजिक विकास लेल कही लेल 'कारीगर'
मुदा अहाँ ई गप किएक नहि बुझहैत छी
समाज सँ पैघ अहाँक अप्पन स्वार्थ
एहेन जुलुम ऐना किएक ई की ?

रुपैया गनै सँ नीक तऽ ई
जे बेटी के शिक्षित बनाऊ
नहि गनाब रुपैया आ नहि केकरो सँ गनायब
एखने सभ गोटे मिली सप्पत खाऊ।

समाज आगू बढ़त तऽ उन्नति होयत
ई गप अहाँ किएक नहि बुझहैत छी
आबो संकीर्ण सोच बदलू
एही सँ बेसी फरिछा के 'कारीगर' कहत की ?

लोक करे लूटमार जेँका
(हास्य कविता)

लोभी बैसल अछि लोभ मे जोंक जेँका
ओक्कर चालि चलब झपटमार जेँका
सरकारी खरांत लेल बेहाल भेल
लोक करे लूटमार जेँका।

लोभी लोकक भीड़ मे केकरा समाझाएब?
'कारीगर' बैसल अछि चुपचाप बौक जेँका
बेईमान लोक ने ईमानदारी सीखत
लोक करे लूटमार जेँका।

डेग-डेग पर भ्रष्टाचारी भेटत
ओ जाल बिछौने बैसल अछि
ओक्कर चालि चलब प्रोपर्टी दलाल जेँका
लोक करे लूटमार जेँका।

सरकारी वेबस्थाक हाल बेहाल
भ्रष्टाचारक बढ़ि गेल मकड़जाल
एहि ओझरी मे ओझराएल कतेक लोक
मुदा नेता नाचए अपने ताल।

जनताक नाम पर फुँसियाहिक जनसेवा
नेतागिरी के धंधा चमकि गेल
सभ खाए रहल सरकारी मेवा
जहिना बाढ़ि मे उपटल माछ कतेक रेवा।
बेमतलब के करैए विदेश यात्रा
विकसित योजनाक नाम पर
बेहिसाब खर्च करैए जेना
सरकारी धन छैक ओक्कर बपौती जेँका?

बाढ़ि-सुखार सँ लोक तबाह भेल
मुदा कोनो स्थायी समाधान नहि कराउत
हवाई सर्वेक्षण मे नेता जी
फुँसियाहिक बिधि टा पुराउत।

राहत आ बचाव के नाम पर
राहत पैकेज के बंदरबाँट भऽ रहल
उज्जर कुर्तावला सभ सँ आगू
ओकर चालि चलब झपटमार जँका।

घोंघाउज आ उपराउंज
(हास्य कविता)

हम अहाँ के गरिअबैत छि
अहाँ हमरा गरिआउ
बेमतलब के करू उपराउंज
धक्कम-धुक्की करू खूम घोघाउंज।

कोने काजे कहाँ अछि
आब ताहि दुआरे तऽ
आरोप-प्रत्यारोप में ओझराएल रहू
मुक्कम-मुक्की क करू उपराउंज।

श्रेय लेबाक होड़ मचल अछि
अहाँ जूनि पछुआउ
कंट्रोवर्सी में बनल रहू
फेसबुक पर करू खूम घोघाउंज।

मिथिला-मैथिल के नाम पर
अहाँ अप्पन रोटी सेकू
अपना-अपना चक्कर चालि में
रंग-विरंगक गोटी फेकू।

अहाँक चक्कर चालि में
लोक भन्ने ओझराएल अछि
अहाँ फेसबूकिया ग्रुप बनाऊ
अपनों ओझराएल रहू हमरो ओझराऊ।
ई काज हमही शुरू केलौहं
नहि नहि एक्कर श्रे तऽ हमरा अछि
धू जी ई तऽ फेक आई.डी छि
अहाँ माफ़ी किएक नहि मंगैत छी?

बेमतलब के बड़-बड़ बजैत छी
तऽ अहाँ मने की हम चुप्पे रहू?
हम की एक्को रति कम छी
फेसबुक फरिछाऊ मुक्कम-मुक्की करू।

आहि रे बा बड्डु बढियां काज
गारि परहू, लगाऊ कोनो भांज
कोनो स्थाई फरिछौठ नहि करू
सभ मिली करू उपराउंज आ घोंघाउज।

पंडा आ दलाल
(हास्य कविता)

एकटा गप साफे बुझहू तऽ
ई दुनू ममिऔते पिसिऔते छि
एकटा अछि जं पंडा
तऽ दोसर अछि दलाल।

साहित्यों आब एकरा दुनू सँ
अछूत नहि रहि गेल
पंडा बैसल अछि पटना में
तऽ दिल्ली में बैसल अछि दलाल।

सभटा साहितिय्क आयोजन में
रहबे करत एककर सझिया-साझ
हँ ओ में छि नहियों में छि
सभटा लकरपेंच लगाबै तिकड़मबाज।

की दरभंगा आ की कलकत्ता?
सभ ठाम बैसल अछि तिकडमबाज
अपना-अपना ओझरी में ओझरौत
आ सुढ़ियाए नहि देत कोनो काज।

पहिने ई काज हमही शुरू केलौहं
बड़-बड़ बाजै भाषाई पंडा
धू जी एककर श्रेय तऽ हमरा
तहि दुआरे अपस्यांत भेल दलाल।
खेमेबाजी आ गुटबाजी केलक
सत्य बजनिहार के धमकी देलक
अपना स्वार्थ दुआरे ई सभ
भाषा साहित्यक सर्वनाश करेलक।

अपने मने बड्डु नीक लगइए
मुदा आई 'कारीगर' किछु बाजत
कहू औ पंडा आ दलाल
एहेन साहित्य समाज लेल कोन काजक?

साहित्य समाज जाए भांड़ में
एकरा दुनू के कोन काज?
साहित्यक ठेकेदारी शुरू केलक
ई दुनूटा भऽ गेल मालामाल।

पद के दुरूपयोग
(हास्य कविता)

फेर भेटत नहि एहेन सुयोग
अपना स्वार्थ द्वारे कानून बनाऊ-तोरू
मनमर्जी सँ करू ओकर उपयोग
अहाँ करू अपना पद के दुरूपयोग

सत्ताक कुर्सी पर बैसल छि अहाँ
कोनो समस्या देखैत छि कहाँ
मोन मोताबिक सी.बी.आई के करू उपयोग
अहाँ करू अपना पद के दुरूपयोग।

अरब-खरब घोटाला करू मुदा
दाँत चिआरैत तिहर जेल सँ निकलू
फेर मंत्री पद हथिआउ आ घोटाला करू
सरकारी खजाना सुडाह क बैसू।

सत्ता कुर्सी आ सरकारी धन
जन्मजात अहाँक बपौती छि
अहाँ करू एककर खूब उपयोग
करू अपना पद के दुरूपयोग।

मूलभूत समस्याक समाधान किएक करब?
एही सँ किछु ने होयत ताहि दुआरे
एहने योजना बनाऊ जाही सँ
अहाँ अप्पन जेबी टा भरब।
करू अन्याय मुदा बर्दी चमकाऊ
अपनों घुस खाऊ नेताजी के सेहो खुआउ
डरे कियो किछु बाजत कोना
दमनकारी नीति अहाँ अपनाऊ।

न्यायक कुर्सी बिका गेल
देशक रक्षक बनी गेल भक्षक
कागजी पन्ना पर आर्थिक योजना
आम आदमीक कष्ट बुजहब कोना?

मंत्री छि लालाबती गाड़ी मे घूमू
जनताक खोज खबरि एकदम नहि करू
एक्के बेर आब अगिला इलेक्शन मे
भोंट दुआरे जनता के मुँह देखू।

दंगा फसाद अहींक इशारा पर
पहिने सँ फिक्स भेल अछि
वोट बैंक पोलिसी के करू उपयोग
अहाँ करू अपना पद के दुरूपयोग।

मुखिया जी देथहिन
(हास्य कविता)

बेमतलब के कोनो काज राज करैत छि
हम तऽ कहब एक्को टा खरहो ने खोंटू
अहाँ हुनका वोट दऽ दिऔन
सब किछु त मुखिया जी देथहिन।

जबनका के बिरधा पिलसिन
बुढ़बा सब के जबनका पिलसिन
व्यर्थ समय गमाऊ त बेकारी पिलसिन
सभटा पिलसिन त मुखिया जी देथहिन।

डिग्री डिप्लोमा नहि अछि तै सँ की ?
आब पढाई लिखाई एकदम नहि करू
हरदम हुनके संपर्क में रहू
शिक्षामित्र के नोकरी तऽ मुखिया जी देथहिन।

सरकारी खरांत हाई रे पंचायती राज
आब रही नहि गेल कोनो काज राज
बिरधा पेसन पास कराऊ कामिसन खाऊ
रुप्पैयाक बंदरबांट त मुखिया जी करथिन।

ईंटाघर वाला के इंदिरा आवास
टूटलाहा घर वाला के लागल तरास
भुखले मरी जायब तऽ बी. प. एल.
अन्तोदय योजना में फेल भेलौहं की पास ?
अप्पन काज राज छोडि के
ब्लोकक चक्कर लगाऊ
मुखिया जी तऽ भेंट भए जेताह
चाहो पान के खर्च तऽ उहे देथहिन।

कमाए खटाए के अहाँ करब की ?
फुसियाँहिक हर कियक जोतब
बँटा रहल अछि सरकारी खरांत
अहाँ दौगल जाउ बाद में हमरा नहि टोकब।

मंगनी के चाउर दाइल सँ पेट भरी जायत
कहियो भुखले नहि अहाँ मरब
कोई ने अहाँ के टोके मुखिया जी ओ.के.
मुखीये जी के कहल टा अहाँ करब।

राहत पैकेज के हेरा फेरी केलन्हि
आब आंखि हुनकर चोन्हरेलैंह
सरकारी लिस्ट में अहींक नाम टा अछि
ओई पर साइन त मुखिया जी करथिहीन.

कठपुतली सरकार
(हास्य कविता)

गठबंधन के ओझरी मे
अहाँ के हम ओझरेने छी
एखने हमर समर्थन आपस आ
मिनिट भरी में खसि पड़त कठपुतली सरकार।

राजनैतिक स्वार्थ दुआरे अहाँ के
बाहरी समर्थन भेटि गेल मुदा
उहो नांगैर सुरैर के भागत आ
फेर अधमरू भऽ जायत कठपुतली सरकार।

गठबंधन मे समर्थन देने छि
मन माफिक मंत्रालय चाही
बेसी छिड़ियाएब तऽ कहि दैत छी
एखने हमर समर्थन आपस।

खाली अपने पार्टिक स्वार्थ देखब
तऽ गठबंधन कोना के चलत?
विपक्षी पार्टी हमरा दऽ रहल अछि हकार
चिंता में डूबल कठपुतली सरकार।

अहाँ जे कहबई सैह हेतई
गठबंधन में अहाँ बनल रहू
अहींक समर्थन पर जान बांचत
नहि तऽ सत्ता विहीन हम बेकार।
फुँसियाहिंक कुर्सी टा पर बैसल छी
एक्को टा फैसला अपनेमने नहि
आलाकमान के ईशारा पर
सभटा काज हम करैत छि।

हमरा सभ मिली नचा रहल अछि
चुपेचाप डरे हम नचैत रहैत छी
की कहू छी हम बेबस आ लाचार
होइए डर हम छि कठपुतली सरकार।

जोड़–तोड़ के राजनीति मे
देशक जनता तबाह भऽ गेल
मुदा अहाँ के कोन फिकीर अछि?
अहाँ छि कठपुतली सरकार।

घोटालावला पाई
(हास्य कविता)

ई पोटरी तऽ हमरा सँ
उठने नहि उठि रहल अछि
कनेक अहूँ जोड़ लगा दियऽ भाई
ई छी घोटालावला पाई।

हम पूछलियन ई की छी
ओ हमरा कान में कहलनि
कोयला बेचलाहा सभटा रुपैया
हम एही पोटरी मे रखने छि।

हमरा सात पुस्त लोकक गुजर
एही रुप्पैया सऽ चली जायत
हम धरती में पैर नहीं रोपाब आई
ई छि घोटालावला पाई।

चुपेचाप थोड़ेक अहूँ लिय
मुदा केकरो सँ कहबई नहि भाई
सरकारी संपित हम केलियई राई-छाई
ई छि घोटालावला पाई।

कोयला भूखंडक बाँट-बखरा दुआरे
मंत्रिमंडल के सर्जरी भेल
लोक हो-हल्ला केलक मुदा
कोयला दलाली के नफ्फा हमरे ता भेल।
फेर मंत्री पद भेटैत की नहि?
ताहि दुआरे चुपेचाप पोटरी बनेलौहं
सभटा अपने नाम केने छि भाई
ई छी घोटालावला पाई।

देखावटी दुआरे सरकारी खजाना पर
बड़का-बड़का ताला लटकने छि
मुदा राति होएते देरी हमही
भेष बदली खजाना लूटि लैत छी।

मंत्रीजी के कहल के नहि मानत?
सरकारी मामला में कियक किछु बाजत?
चुपेचाप सभटा काज होयत छैक औ भाई
ई छी घोटालावला पाई।

डिनर डिप्लोमेसी
(हास्य कविता)

डिनर टेबल पर परोसल अछि
मटर पनीर आ शाही पनीर
छौंकल अछि घी देसी
आउ-आउ ई छी डिनर डिप्लोमेसी।

हम सतारूढ़ दल वला छी
आई सहयोगी दल वला लेल
डिनर माने भोज आयोजित भेल
हमरा समर्थन भेटल खूम बेसी।

आब बाहर सँ समर्थन देनिहार
बाकि रहि गेल छथि तऽ
आई हुनके नामे राजनीतिक डिनर
ई छी डिनर डिप्लोमेसी।

अहाँ सभ जे खाएब
हम अहाँक फरमाईस पुराएब
मुदा एकटा गप कहि दि हम
बाहरि समर्थन के कहाबद्धि कराएब।

भरि पेट खाई जाई जाउ
अहाँ जे खाएब से हम खुआएब
मुदा ई कहू तऽ चुपेचाप रहब
आ की मध्यावधि चुनाव करबाएब।
धू जी महराज अहूँ तऽ
एकदम ताले करैत छी
खाइत-पीबैत काल ई गप नहि
पहिने दारू मँगाउ अहाँ बिदेशी।

डिनर टेबुल के नीचा मे देखू
बोतल राखल अछि देसी-बिदेशी
भरि छाक पीब लियअ
ई छी डिनर डिप्लोमेसी।

अच्छा ई कहू तऽ सरकार
एतेक खर्चा अपना जेबी
आ कि सरकारी खजाना सँ
हमरा धऽ लेलक बेहोशी।

होश मे आउ गठबंधन बचाउ
हम सत्ता मे छी की कहू
अपनो खर्चा सरकारी भेल बड्डु बेसी
ई छी डिनर डिप्लोमेसी।

होरी मे मचाउ हुरदंग
(हास्य कविता)

होरी मे मचाउ कनी हुरदंग
खुशी सँ जिनगी हुए रंग-बिरंग
'कारीगर' दैत अछि शुभकामना
खूम होरी खेलाउ दोस महीमक संग।

उज्जर मुहँ लाल-पीअर करू
खुशी मनाउ कनियो ने डरू
बुढ़बा बाबा मना करैथ तऽ
हुनका माथ पर रंग-बिरंग बैलून फोरू।

रस्ता पेरा रंगीन भऽ गेल
डंफा बजाउ फगुआ गाउ
अहाँ अपने मने झुमू
आई सभ मिली रंग घोरू।

मलपुआ खाउ अबीर उड़ाउ
आई केकरो नहि अहाँ छोडू
पिचकारी मे रंग भरि
ओकरा रंग-बिरंग कऽ छोडू।

कि बुढ़-पुरान कि छौंड़ा मारेर
धियो पूताक मोन भेल रंगीन
अबीर उड़ाउ खुशी मनाउ
अंगने-अंगने होरी खूलाउ।
आई कियो नहि मना करत
सभ नाचै अपना ताले
डंफा डूगडूगाउ ढ़ोलक बजाउ
नाचू अहाँ अपना ताले।

होरी आबि गेल औ भाई
रंग घोरै मे जुनि पछुआउ
हरमोनियावला हे यौ पिपहीवला
आउ-आउ सभ मिली जोगीरा गाउ।

कक्का औ बेसी नहि छिड़िआउ
आई नहि मानब एक्को टा बात
बाल्टी मे अछि रंग घोरल
उज्जर मुँह करब कारी सियाह।

हँसी खुशी सँ होरी खेलाउ
आ खा लियअ देसी भंग
जिनगी होएत रंग-बिरंग
होरी मे मचाउ कनी हुरदंग

मनुक्ख बनब कोना ?

छी: छी: धूर छी: आ छी:
मनुक्ख भऽ मनुक्ख सँ घृणा करैत छी
ओही परमेश्वर के बनाउल
माटिक मूरत हमहूँ छी अहूँ छी।

केकरो देह मे भिरला सँ
कियो छुबा ने जाइत अछि
आबो संकीर्ण सोच बदलू
ई गप अहाँ बुझहब कोना ?

अहिं कहू के ब्राह्मण के सोल्हकन ?
के मैथिल के सभ अमैथिल ?
सभ तऽ मिथिलाक मैथिल छी
आबो सोच बदलू मनुक्ख बनब कोना ?

अपना स्वार्थ दुआरे अहाँ
जाति-पाति के फेरी लगबैत छी
मुदा ई गप कहिया बुझहब
सभ तऽ माँ मिथिले के संतान छी।

पाग दोपटा मोर-मुकुट
सभटा तऽ एक्के रंग रूप छी
मिथिलाक लोक मैथिल संस्कार
एसकर केकरो बपौती नहि छी।

एकटा गप अहाँ करु धियान
सभ गोटे मिथिलाक संतान
जाति-पातिक रोग दूर भगाउ
सभ मिली कए लियअ गारा मिलान।

अपने मे झगरा-झांटी बखरा-बांटी
एहि सँ किछु भेटल नहि ने ?
सोचब के फर्क अछि नहि कोनो जादू टोना
अहिं कहू आब मनुक्ख बनब कोना ?

बेमतलब के गप पर यौ मैथिल
अहाँ एक दोसरा सऽ झगरा करैत छी
माए जानकी दुखित भए कानि रहल छथि
ई गप किएक नहि अहाँ बुझहैत छी ?

सामाजिक-आर्थिक विकास लेल काज करु
मिथिलाक माटि-पानि उन्नति करत कोना
केकरो सऽ कोनो भेदभाव नहि करु
सप्पत खाउ अहाँ मनुक्ख बनब कोना ?

दूधपीबा नेना

आजुके दिन जनमल 'कारीगर'
खुशी सँ हम कहू कोना?
हर्षित भेल अछि मोन हमर
देलहुँ स्नेहबस अहाँ जे शुभकामना।

केखनो के हँसी हम
केखनो अपने मने कानी
मेला घूमै काल माए बाबू संगे
करी हम कोनो बहन्ना।

आई मोन होइए फेर सँ
बनि जाए हम दूधपीबा नेना
रूसल छी आई ने मानब
हमरा किन दियए ने एकटा झुनझुना।

दाई के कोरा मे खूम खेलाई
बाबाक कोरा मे हम कानी
मामा संगे आबि जो रे बौआ
सोर करैथ हमर बुरहिया नानी।

ओई कोरा सँ ओई कोरा जाई
केखनो कऽ कानी केखनो खेलाई
फेर झुल्ला गाड़ी पर बैसी कऽ
अंगने-अंगने घूमलहुँ हम आई।

कियो दुलारैथ कियो पुचकारैथ
कान पकड़ि के उठाबैत-बैसाबैथ
आउ बौआ एम्हर आउ
सभ कियो हमरा सोर पारैथ।

लुक्का-छिप्पी हम खूम खेलाई
तहि दुआरे बड़का बाबू खिसिआइथ
कतए हेरा गेल दुलरूआ बौआ
टुकुर-टुकुर ताकैथ बुरहिया दाई।

आइओ रूसले रहब आ कि हँसब
खेलौना पिप गाड़ी, आ कि झुनझुना ?
जन्मदिन पर पुछलीह हमर माय
किछु ने फुराए, की कहत दूधपीबा नेना ?

बारूद के ढ़ेरी पर बैसल

बारूद के ढ़ेरी पर बैसल हम
अट्टहास कऽ हँसी रहल छी
मिसायल हमला सऽ उड़ा देब
हम अहाँ के नेस्तनाबूद कऽ देब।

हमरा लक एतेक परमाणु शक्ति अछि
हम अप्पन शक्ति प्रदर्शन केलहुँ
हमरा सिमान मे उड़ल जहाज के
अपनेमन ड्रोन हमला सऽ उड़ा देब।

त्रादसि मचल, निर्देष मारल गेल
एहि सऽ केकरो की ?
सभ अपना परमाणु प्रदर्शन मे बेहाल
मानवताक विनाश करै मे लागल छि।

हाहकार मचल, लोक अधमरू भेल
कोन दिसि जाउ सगतरि विनाश
बारूदी अगिलग्गि मे लोक उजड़ी गेल
मुदा ताइयो हवाई हमला रोकल नहि गेल।

संघर्ष विरामक सप्पत खा के
फेर किएक ? गोला बारूद बरसबै छि
अहाँ साम्राज्यवादी पसार दुआरे सगतरि
मानवताक विनाश पर, उतारू भेल छि।

कोनहुँ विवादक फरिछौठ सभ देश मिली
शांति समझौता सँ कएल करू
गोला बारूद सऽ विनाश टा होएत
किएक नहि एक बेर ई गप सोचैत छि।

किशन कारीगर (मूल नाम-कृष्ण कुमार राय)
पिता-श्री सीतानन्द राय (नन्दू), मात-श्रीमती अनुपमा देवी
जन्म-5 मार्च 1983ई (कलकता) मे

किशन कारीगर उपनाम सँ हिंदी/मैथिली मे लेखन. कतेको हास्य कथा, कविता, लघु कथा आ राजनीतिक आलेख, विभिन्न पत्र पत्रिकामे प्रकाशित, आकाशवाणी सँ नाटक प्रसारित। विभिन्न प्रिंट/इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संगठन जेना-अमर भारती, पंजाब केसरी, रियल वॉच (हमार टीवी, चौनल1, टीवी100, आकाशवाणी, दूरदर्शन, खोज इंडिया) न्यूज़ चौनल मे कार्यानुभव. वर्तमान मे आकशवाणी दिल्लीक अंशकालिक संवाददाता पद पर कार्यरत, अर्थेंटिक आइडिया समाचार पत्र आ मिथिलांचल टुडे (मैथिलि पत्रिका) केर संस्थापक-संपादक.

संपर्क - 30/3 बाबा हरीदास कॉलनी टिकरी कलां, पो0-नांगलोई, नई दिल्ली-110041.
फोन. (011)-32670787, मोबाईल न. 9015028661
ई-मेल: kishan.tvnews@gmail.com

मिथिलांचल टुडे प्रकाशन

Corporate- B/333, Tara Nagar, Old Palam Road
Kakrola, sector-15, DWARKA, New Delhi 110078.

Ph-011-65858937, Fax: 011-25324134
Email- mithilanchaltoday12@gmail.com
website- mithilnchaltoday.in

मूल्य: Rs.१००/
Price : US $ 25